ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -18 | अंक - 9 | अगस्त- I, 2017 | पाक्षिक | माउण्ट आबू | रु. 8.00

विश्व में आध्यात्मिक प्रकाश बिखेरती दादी प्रकाशमणि

भारत की भूमि मानवीय विशेषताओं की रत्नगर्भा ही रही है। कुछ दिव्य आभा से आलोकित आत्माओं ने यहाँ जन्म लेकर सभी के जीवन को एक नवीन आभामण्डल प्रदान किया, उन्हें सत्य पथ दिखाया। सबके अंदर गुणों का सौंदर्य और पवित्रता की सुगंध को बिखेरा। आध्यात्मिकता, सौम्यता का प्रकम्पन पूरे विश्व में फैलाकर सबके लिए एक मिसाल बन गए। ऐसे ही दिव्य आभा से आलोकित एक राजयोगिनी, अति आकर्षण करने वाली, चमत्कारिक व्यक्तित्व, जिनको आज भी समस्त मानवजाति अपना प्रेरणास्रोत मानती, ऐसी हमारी दादी जी को मानवता की ओर से अभिवादन अभिनंदन...

जीवन में जब कोई उतार-चढ़ाव आता है तो हम उसको ठीक करने हेतु अलग-अलग तरह की विधियाँ अपनाते हैं। विधियाँ अपनाने के बावजूद भी कुछ न कुछ असंतोष हमारे जीवन में दिखता ही है। इसलिए अध्यात्म की उज्जवल ज्योति उसमें एक उम्मीद के किरण के रूप में काम करती है। ऐसी ही हमारी एक प्रकाश की किरण, प्रकाश पुंज दादी प्रकाशमणि जी रहीं, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन से बहुतों के जीवन को प्रकाशित किया।

दादी प्रकाशमणि ने अध्यात्म को अपना जीवन बनाया, और उस जीवन से दुनिया में अध्यात्म की लहर फैला दी। चंदन लगाने वाला और घिसने वाला, दोनों के हाथों में उसकी खुशबू रह जाती है। ऐसे ही दादी किसी का जीवन बनाने के लिए अपना सर्वस्व देने को आतुर रहती थीं। गुणों की सौंदर्य और उसकी खुशबू फैलाना उनकी आदतों में शुमार था। उनके जीवन में रुकावटें और बाधाओं के पहाड़ आए, लेकिन वो अपने साधना पथ पर निरंतर आगे बढ़ती रहीं।

उनका जीवन चरित्र आज सबके लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया है। इस बार हम दादी जी के पुण्य तिथि के दसवें वर्ष में पहुँच चुके हैं। विगत दस वर्षों में दादी जी की स्मृति में, उनके किये गए कर्मों को अपने जीवन में अपनाकर बहुतों ने अपने जीवन को अलौकिक और दिव्य बना लिया। ऐसे वृहद व्यक्तित्व का हमारे बीच ना होना, जैसे ये लगता है कि मानवता की भरपाई कैसे होगी। लेकिन उनकी शिक्षायें आज मानव अपने अंदर भरकर अगर वैसा व्यक्तित्व जीता है, तो उनकी भरपाई थोड़ी बहुत हो सकती है, और ऐसा आज हमारा समस्त ईश्वरीय परिवार कर भी रहा है।

दादी जी अनन्य थीं, चुम्बकीय व्यक्तित्व की धनी थीं। हमारा वश चले तो हम उनको आज भी अपने पास रख लें, लेकिन विधि का विधान ये नहीं कहता। आज उनके गुण और शिक्षायें हमारे साथ जीवंत रूप में हैं। ऐसे चुम्बकीय व्यक्तित्व को हम कितना ना नमन करें।

दादी प्रकाशमणि - एक प्रकाश स्तम्भ

दादी जी के बारे में आज तक अनेकों के द्वारा इतना कुछ कहा और लिखा गया है कि उनको पिरो कर एक लम्बी पुस्तकमाला बनाई जा सकती है। हरेक के पास दादी जी के साथ के अनुभवों के खज़ाने भरे पड़े हैं। दादी ने किसी के साथ एक दिन, एक घण्टा या फिर एक मिनट ही क्यों न बिताया हो, वह पल उस आत्मा के जीवन भर के लिए यादगार बन चुका है। दादी ने किसी का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे प्यार और ममता से ओत-प्रोत रुहानी दृष्टिमात्र दी हो, वह दृष्टि उस आत्मा के लिए बाबा के यज्ञ में उसे मददगार बनने के लिए आजीवन प्रेरित करती रही है।

क्या बड़ा-क्या छोटा, क्या भारतीय-क्या विदेशी, क्या टीचर्स-क्या यज्ञ रक्षक भाई, क्या दीदी क्या हमजिन्स, हरेक के दिल में दादी जी ने अपने रुहानी व्यक्तित्व के किसी न किसी पहलू की छटा सदा के लिए छोड़ रखी है।

दादी यज्ञ का श्वांस थी

आज दादी हम सबके बीच साकार रूप में नहीं हैं, पर हम आप सभी से पूछना चाहते हैं कि ऐसा आपने कभी एक पल के लिए भी महसूस किया है? नहीं ना? परमात्मा द्वारा बनाये यज्ञ की दादी श्वांस थी और यज्ञ की श्वांस अभी भी चल रही है तो इसका मतलब है कि दादी जी आज भी हम सबके बीच में हैं।

वे पारसमणि थीं

दादीजी एक ऐसी पारसमणि थीं जो जिसे छू लें उसे सोना बना देने की क्षमता रखती थीं। अक्सर उन्हें एक बार मिलने वाले के मन में सवाल उठता था कि एक बार मिलकर मुझे दादी ने इतना भरपूर किया है तो उनके साथ सदा रहने वाली आत्मायें कितनी भाग्यशाली होंगी, जिनको हर दिन, हर पल भरपूरता का लाभ मिलता होगा। उस आत्मा को यह अफसोस होता कि काश मैं इतना समय दादी जी के साथ बिता पाता और उनसे हर पल कुछ सीखता। हमारे दिलोदिमाग से दादी जी की याद को निकाला नहीं जा सकता, परंतु उनके स्मृति दिवस पर केवल उनको प्यार से याद कर आँसू बहाना या भावुक हो जाना, क्या इससे दादी जी खुश होंगी? या फिर दादी जी के गुणों और कर्त्तव्यों को, उनकी उम्मीदों और आशाओं को, उनके रहे हुए अधूरे वृहद कार्य को हमारे द्वारा पूर्ण होते हुए देखकर खुश होंगी?

इस बार हम उनका दसवाँ पुण्य स्मृति दिवस मना रहे हैं, तो यह घड़ी हमारे लिए केवल दादी जी को याद करने की ही नहीं, अपितु अपना आत्म-विश्लेषण करने की है। अपने को शान्ति की गहराई में ले जाकर अपनी अंतरात्मा को टटोलने की यह घड़ी है। दादी जी के गुण और विशेषताओं का वर्णन करते हुए हमारी जुबान थकती नहीं है। तो क्या उनकी विशेषताओं को मैंने भी अपने जीवन में धारण किया है? अगर हाँ तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी स्मृतियाँ याद होंगी। दादीजी की याद में हम प्रकाश स्तम्भ के आगे जाकर मौन खड़े रहते हैं। उस समय दादी और उनके द्वारा मिली हुई सर्व शिक्षायें चित्र फीती की तरह एक-एक कर अंतर्दृष्टि के आगे सरकती जाती हैं, और हमारे यादों के बगीचे के फूलों को नयी सुंदरता और खुशबू से भर देती हैं। उस चित्र फीती का पहला चित्र सामने आता है और दादी जी, हम आप जैसी एक आम व्यक्ति के रूप में दिखती हैं।